साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 23-29 मार्च, 1986

क्या लोक दल के अध्यक्ष अजीत सिंह होंगे ?

कुछ दिनों से चौधरी अजीत सिंह का नाम धड़ल्ले से अखबारों में आ रहा है और ऐसा हुआ है लोक दल के नेतृत्व को ले कर।

लोक दल के वर्तमान नेता चौधरी चरण सिंह अब प्रायः अस्वस्थ रहते हैं। फिलहाल यह हालत भी नहीं है कि किसी से मिल-जुल सकें या कोई बात कर सकें। परिवार के सदस्य भी बड़ी मुश्किल से उनका पूरा हाल-चाल ले पाते हैं। यही वजह है, नेतृत्व का सवाल उठने का। वरना चौधरी चरण सिंह इतनी आसानी से महत्वपूर्ण पद से अलग होने वाले कहां थे।

अजीत सिंह का नाम पहली बार सुनने में आया है, क्योंकि अब तक का अपना समय उन्होंने अमेरिका में बिताया है। उनको स्वदेश लौटे अभी ज्यादा दिन नहीं हो पाए थे कि लोक दल के अध्यक्ष पद के लिए उनका नाम आने लग गया। अगर यह पद रिक्त होने वाला न होता तो शायद वह अतिविकसित देश को छोड़ कर इस अर्द्ध-विकसित देश का जायजा लेने की कोई जरूरत भी नहीं महसूस करते। आए और सीधे अध्यक्ष पद के ही दावेदार बन बैठे। लोक दल जैसी संगठित पार्टी का नेतृत्व संभालने के लिए योग्यता के नाम पर इतना पर्याप्त है कि वर्तमान अध्यक्ष चौधरी चरण सिंह इनके पिता हैं। न पार्टी का कभी कोई काम किया, न सचिव बने, यहां तक कि सदस्यता भी ग्रहण नहीं की। बस, एकबारगी अध्यक्ष बन जाने पर तुले हैं।

वैसे हमेशा से सुनते रहे हैं कि चौधरी चरण सिंह पार्टी के मामलों में वंश-परंपरा की नीति के विरोधी रहे हैं। उनके निकटवर्ती सूत्रों द्वारा यही कहा और बताया जाता है। मगर हाल की गतिविधियों से लगता है कि ये सब सिर्फ कहने की बातें हैं। क्योंकि वाकई अगर ऐसा होता तो श्री अजीत सिंह का नाम इस प्रकार से चर्चा का मुद्दा बनता ही नहीं। यह भी एक अच्छी राजनीति रही कि चौधरी साहब के मातहत उनके पार्टी के हितों के हिमायती होने का प्रचार करते रहें और श्री अजीत सिंह का नाम गाहे-ब-गाहे अखबारों में उछाला जाता रहे। जब तक लोगों को सही बात का पता नहीं चलेगा, तब तक तो किसी-न-किसी रूप में इस मामले पर बहस चलती ही रहेगी।

चौधरी साहब के नई दिल्ली स्थित १२-तुगलक रोड निवासस्थान पर संपर्क करने के बाद तो अजीब-सी भ्रामक स्थिति से साबका पड़ता है और किसी के लिए भी एक निश्चित निर्णय लेना कठिन हो जाता है। चौधरी साहब से मिलने की कोशिश बेकार जाती है। मिलने-जुलने की बात तो दूर, वे टेलीफोन पर भी एक मिनट बात करने में असमर्थ हैं। वहां स्थायी रूप से चौधरी साहब की सेवा में रहने वाले एक लोक दल कार्यकर्ता की बातों से तो लगता है कि उन्हें इस बात की जानकारी ही नहीं है कि लोक दल के नेतृत्व को ले कर देश में चर्चा भी हो रही है या नहीं। एक और सज्जन बताते हैं कि हम तो सिर्फ पार्टी के कार्यकर्ता हैं भाई साहब, जो कहा जाता है, मान लेते हैं।

अजीत सिंह जी से ताजातरीन बातें नहीं हो पाई हैं। इधर इनके राजधानी से बाहर रहने के कारण। कुछ दिन पहले उनसे बातचीत हुई थी और उन्होंने लोक दल का अध्यक्ष पद स्वीकार करने के प्रति अपनी अनिच्छा व्यक्त की थी। अच्छी बात है, ऐसा उन्हें कहना भी चाहिए था। वह स्वयं अपने मुंह से कैसे कहें कि वह पद पाने के काफी इच्छुक हैं। आखिर पार्टी का मामला ठहरा, कोई घर की बात तो है नहीं कि जब जी में आया, निर्णय ले लिया। पार्टी के लोग चाहेंगे तो उन्हें क्यों आपत्ति होगी ? उनको आपत्ति होने का सवाल भी तो नहीं उठता। पार्टी के अधिकांश लोग चाहेंगे, उसे नहीं माना जाए तो फिर पार्टी कैसे चलेगी ? जाहिर है कि श्री अजीत सिंह अपने पिता के प्रशंसकों और शुभचिंतकों की बात नहीं काट सकते। चौधरी साहब भी विवश हैं। उनकी पार्टी के लोगों को एकदम फड़कता हुआ युवा नेता चाहिए, जो सत्तारूढ़ पार्टी के युवा नेता के विरुद्ध जोरदार विपक्ष की भूमिका निभा सके। सचमुच यह बड़े मौके की बात है कि लोक दल के तमाम कार्यकर्ताओं को आखिर हो क्या गया है ? तभी तो श्री हेमवती नंदन बहुगुणा जैसे दिग्गज और अनुभवी महारथी उनके गले के नीचे से उतर नहीं रहे। दरअसल बहुगुणाजी को गले के नीचे उतारने की पेशकश ही नहीं की गई, वर्ना श्री अजीत सिंह का नाम सामने आता ही नहीं। जब से इस प्रसंग पर अखबारों में टीका-टिप्पणी शुरू हुई है, तब से एक बार भी बहुगुणाजी ने किसी भी समाचार का खुल कर खंडन नहीं किया है। इसका मतलब है कि उन्हें चौधरी साहब की नाराजगी का भय है और इस भय का कारण है चौधरी साहब के मन में कहीं-न-कहीं अपने पुत्र के प्रति कमजोरी है जरूर, और साफ-साफ कहने से कतरा रहे हैं।

जो भी हो, इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि श्री अजीत सिंह का लोक दल का अध्यक्ष बनना पूरी तरह पार्टी के हित में नहीं होगा। लोक दल के वर्तमान अध्यक्ष एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें इस देश की वक्त-बेवक्त उगमगाती रहने वाली अर्थ-व्यवस्था की पूरी-पूरी जानकारी है और जो 'समूचे भारत के गरीबों का मसीहा' होने का दावा करते हैं। यह बात कतई सौ फीसदी नहीं मानी जा सकती कि लोक दल के सारे लोग सर्वसम्मति से श्री अजीत सिंह को नेता मान लेने को तैयार हैं—एक ऐसे व्यक्ति को, जिसने अपनी आधी जिंदगी अमेरिका में बिताई है और जिसे अपने देश की आबादी व क्षेत्रफल तक की जानकारी नहीं है। वैसे होने को तो कुछ भी हो सकता है मगर लोक दल कम-से-कम एक प्रमुख राष्ट्रीय प्रतिपक्ष के रूप में तो मौजूद है ही। अतः इसका नेतृत्व सिर्फ भावनाओं में बह कर नहीं सौंपा जाना चाहिए, वरन् एक सही दृष्टिकोण की परख की जानी चाहिए ताकि आलोचना का कोई तत्व न रहे।

—शशिधर खां